Topic 87 कर्मकारक 4

गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ

गत्याद्यर्थानां, शब्दकर्मणाम्, अकर्मकाणां च (धातूनां) अणौ यः कर्ता स णौ कर्म स्यात्॥

गतीत्यादि किम्? पाचयत्योदनं देवदत्तेन। अण्यन्तानां किम्? गमयति देवदत्तो यज्ञदत्तं, तमपरः प्रयुङ्क्ते (इति) गमयति देवदत्तेन यज्ञदत्तं विष्णुमित्रः।

गति अर्थवाले, बुद्धि (ज्ञान) अर्थवाले, प्रत्यवसान (भक्षण) अर्थवाले धातुओं का, शब्द ही जिनका कर्म हो उन धातुओं का तथा अकर्मक धातुओं का णिच् से पूर्व अवस्था का कर्ता (ण्यन्त) अवस्था में कर्म संज्ञक हो। गत्यादि क्रम से उदाहरण दिये जाते हैं। 'शत्रूनगमयत् स्वर्गम्' इत्यादि कारिका में :—

(1) शत्रवः स्वर्गम् अगच्छन्, तान् (शत्रून्) हरि स्वर्गम् अगमयत् (भेजा) शत्रुगण स्वर्ग गये, उन शत्रुओं को हरि ने स्वर्ग भेजा। इसमें गत्यर्थक 'गम्' धातु का 'णिच्' से पूर्व अवस्था का कर्ता (शत्रवः) 'अगमयत्' इस 'ण्यन्त' अवस्था में कर्मसंज्ञक होता है और उसमें द्वितीया विभक्ति प्रयुक्त होने से 'शत्रून्' हो जाता है।